हिंदी और असमिया कारक-व्यवस्था : एक व्यतिरेकी अध्ययन

कल्पना पाठक
शोध छात्रा, हैदराबाद विश्वविद्यालय

हिंदी और असमिया भाषा की कारक-व्यवस्था

किसी वाक्य में व्यवहृत संज्ञा या सर्वनाम का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध सूचित होता है, उसे कारक कहते हैं। कामताप्रसाद गुरु के अनुसार "संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है, उस रूप को कारक कहते हैं |"1 कारक किसी-न-किसी रूप में क्रिया से संबंधित होता है। हिंदी भाषा में आठ कारक हैं- कर्ता, कर्म, कारण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधनकारक। "कारकों के बोध के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, उन्हें व्याकरण में विभक्तियाँ कहते हैं |"2 विभक्तियों को कारक चिह्न या परसर्ग भी कहा जाता है। हिंदी में कारकों के समान ही कारक चिह्न आठ हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1-गुरु, कामताप्रसाद, बृहत् हिंदी व्याकरण, साहित्यगार, जयपुर, 2009 ई., पेज. 193

2-पाण्डेय, डॉ. लक्ष्मीकांत, मानक हिंदी व्याकरण, विद्या प्रकाशन, कानपूर, 2000 ई., पेज. 137

कारक	**कारकचिह्न**
कर्ता	0, ने
कर्म	0, को
करण	से (के द्वारा)
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से (पृथक)
संबंध	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	में, पर
संबोधन	0, हे, अरे, अजी, अहो

असमिया भाषा में कारक की संख्या छह हैं – कर्ता, कर्म, करण, निमित्त, अपादान, अधिकरण कारक। इन कारकों का क्रिया के साथ संबंध है, पर असमिया भाषा में क्रिया के अभाव में भी वाक्य संभव है, जैसे- 'तोमार नाम कि ?' (तुम्हारा नाम क्या ?)। इस वाक्य में क्रियापद नहीं होने के बावजूद 'तोमार' (तुम्हारा) के साथ नामपद संबंधित है। ऐसे संबंधों को वैय्याकरण प्रणेताओं ने 'संबंधपद' कहा है। परंपरागत व्याकरण में इसे कारक के अंतर्गत नहीं रखा गया था, पर आधुनिक व्याकरण में इसे कारक के अंतर्गत ही माना जाता है। असमिया भाषा की कारक तथा विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं -

कारक		**विभक्ति**
	स्वरांत	व्यंजनांत
कर्ता	ए, इ, 0	ए, 0
कर्म	क, 0	अक,0
करण	रे	अरे
निमित्त	लै	अलै
अपादान	-	-
संबंधपद	र	अर
अधिकरण	त	अत

हिंदी और असमिया भाषा की कारक-व्यवस्था में व्यतिरेक

वाक्य में जिसका संबंध क्रिया के साथ होता है उसे कारक कहा जाता है। संख्या की दृष्टि से हिंदी में आठ कारक हैं और असमिया में सात। दोनों भाषाओं की कारक-व्यवस्था में अभिव्यक्ति की दृष्टि से भिन्नताएँ नजर आती हैं। हिंदी भाषा में आठों कारकों की विभक्ति या परसर्ग हैं पर असमिया में संबोधन कारक न होने के साथ ही अपादान कारक की विभक्ति नहीं है। इसे संबंधपद की विभक्ति 'र' के बाद 'परा' परसर्ग प्रयुक्त करके अभिव्यक्त किया जाता है। इसके अलावा दोनों भाषाओं में प्रयुक्त कारकचिह्नों की प्रयोगगत भिन्नताएँ है। इस तरह हिंदी और असमिया भाषा की कारक-व्यवस्था में अनेक विषमताएँ तथा व्यतिरेक मौजूद हैं, जिन्हें इस तरह विश्लेषित किया जा सकता है -

कर्ता कारक :- "जो शब्द वाक्य में काम करने का बोधक हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं |"3 कर्ता क्रिया का निष्पादन करता है। हिंदी भाषा में कर्ता का बोध '0', 'ने', 'को', 'एँ', 'ए', 'से' और 'के' आदि सात तरह के कारक चिह्नों से होता है। पर असमिया में सिर्फ '0', 'ए', 'क' और 'र' चार तरह के कारकसूचक प्रयुक्त होते हैं |

उदाहरण के लिए –

हिंदी	**असमिया**
मैं पढ़ रही हूँ (0)	मइ पढ़ि आछो (0)
राम ने फल तोड़ा (ने)	रामे फल छिङिले (ए)
पिता को पानी चाहिए (को)	देउताक पानी लागे (क)
हमें अब चलना चाहिए (एँ)	आमि एतिया याब लागे (0)
उसे दवाई लेनी चाहिए (ए)	सि औषध खाब लागे (0)
मुझसे गलती हो गई (से)	मोर भूल ह'ल (र)
खगेन के दो बेटे हैं (के)	खगेनर दुजन ल'रा आछे (र)

इसके अलवा प्रयोग की दृष्टि से हिंदी और असमिया भाषाओं के कर्तासूचकों की भिन्न स्थिति है -

1.कर्तासूचक '0'-

हिंदी भाषा में गतिक क्रिया और वर्तमान तथा भविष्य काल के सकर्मक वाक्यों में केवल कर्तास्थानीय प्रयोग (0) होता है। अर्थात

इसमें कारकचिह्न प्रयुक्त नहीं होता। असमिया भाषा के वाक्यों में यदि कर्ता के स्थान पर एकवचन के सर्वनाम जैसे- 'मइ, तइ, तुमि, आपुनि, सि, ताइ, इ, एइ, एओं, तेओं, यि' और बहुवचन के सर्वनाम 'आमि' प्रयुक्त होते हैं तो कर्ताकारक का बोधन सिर्फ कर्तास्थानीय प्रयोग अर्थात '0' के प्रयोग से होता है।

जैसे-

हिंदी में- मैं नहा रहा हूँ (0) |

असमिया में- मइ गा धुइ आछो (0) |

2. कर्तासूचक 'ने' और 'ए', 'इ'-

क. हिंदी भाषा में कर्ता सूचक 'ने' का प्रयोग भूतकाल सकर्मक क्रिया वाले कर्ता के साथ होता है। असमिया भाषा में कर्तासूचक 'ए', 'इ' का प्रयोग सभी कालों तथा क्रियारूपों के वाक्यों में कर्ता के साथ होता है |

जैसे-

हिंदी	**असमिया**
फूफा ने केला खाया (ने)	पेहाइ कल खाले (इ)
रमेश रोटी खाता है (0)	रमेशे रुटि खाय (ए)
दोस्त पढ़ रहा है (0)	बंधुए पढ़ि आछे (ए)
हीरा काम करेगी (0)	हीराइ काम करिब (इ)
राम रोया था (0)	रामे कांदिछिल (ए)

इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी की 'ने' उपसर्ग की तुलना में असमिया की 'ए', 'इ' विभक्ति का प्रयोग व्यापक है एवं प्रयोग का आधार भी भिन्न है |

ख. अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में हिंदी में कभी-कभी 'ने' का प्रयोग होता है पर असमिया के 'ए' का प्रयोग नहीं होता |

जैसे-

हिंदी - सागर ने नहाया (ने)

असमिया - घर परिल (0) (घर गिर गया)।

ग. हिंदी का 'ने' परसर्ग अपरिवर्तनशील है। असमिया की 'ए' विभक्ति कर्तास्थानीय संज्ञा या सर्वनाम की अंतिम स्वनिम के अनुसार परिवर्तित होती है |

जैसे-

हिंदी	**असमिया**
राम ने पत्र लिखा (ने)	रामे चिठि लिखिले (ए)
फूफा ने पान खाया (ने)	पेहाइ पाण खाले (इ)
मिताली ने पानी पिया (ने)	मितालीये पानी खाले (ये)
मधु ने कलम तोड़ा (ने)	मधुवे कलमटो भाङिले (वे)

कर्म कारक :- कर्ता के क्रियाव्यापार का बल जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। हिंदी और असमिया दोनों भाषाओं में

अर्थ की दृष्टि से कर्म कारक की स्थिति एक जैसी है पर, प्रयोग की दृष्टि से कुछ व्यतिरेकी स्थितियाँ हैं -

हिंदी में '0', 'को', 'ए', 'एँ', 'से' इत्यादि कारकसूचकों से कर्मकारक का बोधन होता है लेकिन, असमिया में '0', 'क', 'अक' सिर्फ तीन कारकसूचकों द्वारा कर्म कारक का बोध होता है। जैसे-

हिंदी में	असमिया में
हमनें आम चुराया (0)	आमि आम चुरि करिलों (0)
बालि ने सुग्रीव को मारा (को)	बालिये सुग्रीवक मारिले (अक)
उसने मुझे गिराया (ए)	सि मोक पेलाले (क)
सर ने हमें पढ़ाया (एँ)	छारे आमाक पढ़ाले (क)
पिता ने उससे कहा (से)	देउताके ताक क'ले (क)

करण कारक :- जिसके द्वारा काम संपन्न किया जाता है, उसे करण कारक कहते हैं। हिंदी भाषा में करण कारक का द्योतन 'से', 'के द्वारा', 'के जरिये' से होता है तथा असमिया में 'रे', 'एरे', 'द्वारा', 'सैते', 'हतुवाइ', 'जरियते', 'दि', 'धरि' इत्यादि शब्दों के प्रयोग से करण कारक का बोधन होता है। जैसे-

हिंदी - बच्चा भूख से व्याकुल है |
मजदूर के द्वारा घर बनवाया गया |
पत्र के जरिये खबर मिली |

असमिया - कोदालेरे माटि खान्दा। (फावड़े से मिट्टी खोदो)
कलमेरे लिखा। (कलम से लिखो)
डाकोवालर हतुवाइ चिठिखन दिबा। (डाकिया के जरिये पत्र देना)
मइ हातेदि आङुर छिङिलो। (मैंने हाथ से अंगूर तोड़ा)
आपुनि धैर्य धरि काम करिब। (आप धैर्य से काम कीजिये)

संप्रदान तथा निमित्त कारक :- क्रिया जिस प्रयोजन से संपादित होता है, उसे हिंदी में संप्रदान कारक तथा असमिया में निमित्त कारक कहा जाता है |

क. प्रयोग की दृष्टि से हिंदी भाषा के संप्रदान कारक में '0', 'को', 'के लिए' आदि संप्रदान सूचक प्रयुक्त होते हैं। असमिया में '0', 'लै', 'अलै' 'क', 'कारणे', 'निमित्ते' निमित्तसूचक प्रयुक्त होते हैं |

जैसे-

हिंदी	**असमिया**
प्रीता पढ़ने बैठी (0)	प्रीताइ पढ़िब बहिछे (0)
इनको दवा दीजिए (को)	एओंक औषध दिया (क)
बच्ची के लिए दूध लाओ (के लिए)	पोवालीजनीर कारणे गाखीर आना (कारणे)
इनके लिए कपड़ा लाओ (के लिए)	एखेतर निमित्ते कापोर आना (निमित्ते)
वह घर गया (0)	सि घरलै गैछे (लै)
तुम दौलाशाल तक मत जाना (0)	तुमि दौलाशाललै नायाबा (अलै)

ख. कुछ क्रियार्थक संज्ञाओं में असमिया में विभक्ति का प्रयोग होता है, पर हिंदी में नहीं होता-

असमिया	**हिंदी**
सि खेलिबलै गैछिल (लै)	वह खेलने गया था (0)
मइ पढिबलै याम (लै)	मैं पढ़ने जाऊँगा (0)

ग. हिंदी और असमिया में संप्रदान कारक की अभिव्यक्ति समान नहीं है। जहाँ हिंदी में 'को' का प्रयोग होता है वहीं कभी-कभी 'को' के स्थान पर 'के लिए' का प्रयोग समीचीन होता है। पर असमिया में 'क' के स्थान पर 'लै' का प्रयोग नहीं हो सकता। इसे उदाहरण के जरिये देख सकते हैं -

हिंदी - उसने गरीब को दान दिया
उसने गरीब के लिए दान दिया

असमिया - सि दुखियाक दान दिले |

अपादान कारक :- अपादान का अर्थ अलगाव की प्राप्ति है। अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु से दूसरी वस्तु से अलगाव या पार्थक्य का अर्थ व्यंजित होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। हिंदी में अपादान कारक के लिए 'से' कारक चिह्न प्रयुक्त होता है। असमिया में अपादान कारक का कारकचिह्न न होने के कारण संबंध पद के कारकचिह्न के साथ 'परा' संयुक्त रूप से प्रयुक्त होता है |

जैसे-

हिंदी - बन्दुक से गोली निकली

असमिया -बन्दुकर परा गुली ओलाले

निर्दिष्ट वस्तु से पृथक करने के अर्थ में हिंदी और असमिया भाषा में व्यतिरेक है। क्योंकि इस संदर्भ में हिंदी भाषा में दो परसर्गों का प्रयोग होता हैं- पहला अधिकरण कारक का 'में' या 'पर' विभक्ति तथा दूसरा अपादान का 'से'। पर असमिया भाषा में इस संदर्भ में अधिकरण कारक की विभक्ति नहीं आती |

जैसे-

हिंदी - इनमें-से एक किताब लीजिए(में, से)
मोहन छत पर से गिर पड़ा (पर, से)

असमिया -एइबिलाकर परा एखन किताप लओँक (र + परा)
मोहन छालर परा परि ग'ल (र + परा)

संबंध पद :- क्रिया के अलावा जो पद वाक्य में अन्य पदों के साथ संबंध सूचित करता है, वही संबंध पद है। हिंदी भाषा में इसके लिए 'का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री', 'ना', 'ने', 'नी' इत्यादि कारकसूचक का प्रयोग होता है तथा असमिया में 'र', 'अर' का प्रयोग होता है। हिंदी और असमिया दोनों भाषाओं में संबंध पद में कुछ व्यतिरेकी स्थितियाँ हैं, जो इसप्रकार हैं -

हिंदी में संबंध पद का प्रत्यय भेद्य-भेदक से प्रभावित होकर नौ रूप में मिलते हैं पर असमिया की संबंध पद की विभक्ति सिर्फ दो रूप में हैं-

हिंदी	**असमिया**
उसका बेटा (का)	तार ल'रा (र)
राम की बेटी (की)	रामर छोवाली (अर)
उसके घोड़े (के)	तार घोँराबोर (र)
तुम्हारा डिब्बा (रा)	तोमार टेमा (र)
मेरी घड़ी (री)	मोर घड़ी (र)
तेरे किताबें (रे)	तोर कितापबोर (र)
अपना काम (ना)	निजर काम (अर)
अपनी बात (नी)	निजर कथा (अर)
अपने लोग (ने)	निजर मानुह (अर)

अधिकरण कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार अर्थात क्रिया के स्थान, समय, भाव आदि का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। क्रिया का जो स्थान या आधार है, वह स्थानाधिकरण या आधाराधिकरण है एवं क्रिया का जो समय है वह समयाधिकरण है। अधिकरण कारक के बोधन हेतु हिंदी में 'में' और 'पर' का प्रयोग होता है तथा असमिया में 'त' और 'अत' का प्रयोग होता है। इनके प्रयोग की दृष्टि से दोनों भाषाओं में व्यतिरेक है |

जैसे-

हिंदी	**असमिया**
अगले महीने घर जाऊँगा (0)	अहा महत घर याम (अत) |
तुम समय पर आये हो (पर)	तुमि समयत आहिला (त) |
वह गर्मियों में शिलांग जाएगा (में)	सि गरमत छिलं याब (त) |

क. हिंदी में स्थान और समयवाची संज्ञाओं के साथ कराकचिह्न प्रयुक्त नहीं होते हैं पर असमिया में इनमें अधिकरण की विभक्ति लगती है |

जैसे-

हिंदी - उन दिनों (0) हम यहाँ (0) रहते थे |

असमिया - सेइ समयत (त) आमि इयात (त) आछिलो |

ख. आधार विषयक अधिकरण कारक की स्थिति में हिंदी में प्रयोग संदर्भ से ही पता चलता है तथा असमिया में 'त' विभक्ति प्रयुक्त होती है |

जैसे-

हिंदी	**असमिया**
आप कहाँ रहते हैं ?(0)	आपुनि क'त थाके ? (त)
नदी के किनारे घूमिये (0)	नदीर पारत फुरक (त)

संबोधन कारक :- जिन शब्दों से संबोधन का बोध होता है उसे संबोधन कारक कहा जाता है। असमिया भाषा में संबोधन कारक नहीं है। इसलिए हिंदी और असमिया दोनों भाषाओँ में संबोधन की स्थिति में रूपगत अंतर होता है। संज्ञा के पूर्व प्रयोग होनेवाले संबोधन के अव्ययों में भी दोनों भाषाओँ में अंतर है। जैसे- हिंदी में संबोधन सूचक अव्ययों के सामाजिक स्तर के आधार पर

अधिक भेद नहीं होते हैं। असमिया में ये अव्यय सामाजिक स्तर के अनुरूप प्रयुक्त होते हैं-

हिंदी	**असमिया**
ए लड़के! इधर आओ	हेर/एइ ल’रा ! एइफाले आह
अरे भाई! उधर जाओ	हेरा/ओ भाइटि ! सेइफाले योवा
अजी! सुनिए	हेरी ! शुनकचोन
हे भगवान! रक्षा करना	हे भगवान ! रक्षा करिबा

इस तरह हम देखते हैं कि दोनों भाषाओं की कारक-व्यवस्था संख्या की दृष्टि से समान नहीं है, क्योंकि असमिया भाषा में संबोधन का जिक्र नहीं है तथा अपादान कारक का कारक चिह्न नहीं है। दोनों भाषाओं में कारकों की अभिव्यक्ति एवं कारक चिह्नों की प्रयोगगत भिन्नता नजर आती है। किसी-किसी कारक में हिंदी में कारकसूचक अधिक हैं तो किसी-किसी में असमिया के कारकसूचक अधिक दिखाई पड़ते हैं |